विद्या भारती संकुल संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

नवंबर 2022 | कार्तिक -मार्गशीर्ष, विक्रमी सं. 2079

महामना मदनमोहन मालवीय का दीक्षान्त भाषण – 14 दिसम्बर 1929

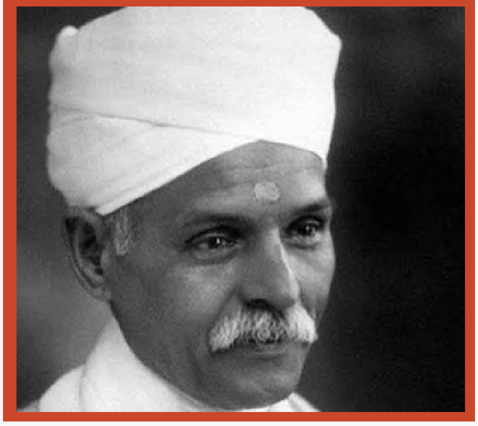

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 : एक स्वागत योग्य पहल

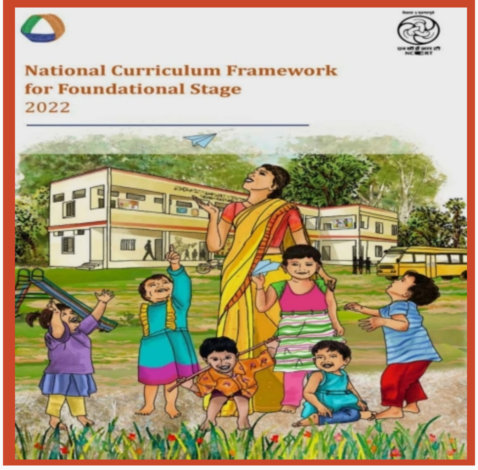

विद्या भारती का 33वां राष्ट्रीय खेलकूद समारोह, कुरुक्षेत्र में सम्पन्न

- समापन कार्यक्रम में श्री गोबिंद चन्द्र महंत अखिल भारतीय संगठन मंत्री विद्या भारती, श्रीराम आरावकर अ.भा. सह संगठन मंत्री, हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद गुप्ता, हॉकी खिलाड़ी ऋतु रानी एवं श्री सोमनाथ सचदेवा, कुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का विशेष सान्निध्य।
- 19-23 नवम्बर तक चले इस आयोजन में देशभर से 708 खिलाड़ी, 108 निर्णायक, 103 संरक्षक आचार्य उपस्थित रहे। कुल 225 कार्यकर्त्ता इस भव्य आयोजन के प्रबंधन में लगे।
- सीमावर्ती क्षेत्रों यथा- सांकड़ा (जैसलमेर), चंदन चौंकी (अवध - नेपाल सीमा), सिद्धार्थ नगर (गोरक्ष - नेपाल सीमा), गंगटोक (सिक्किम - चीन सीमा) से भी प्रतिभागी रहे खिलाड़ी।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र सर्व विजेता (ओवरॉल चैम्पीयन) रहा।
- अगले वर्ष 2023 में उत्तर पूर्व (बिहार) क्षेत्र रहेगा आयोजक।

अखिल भारतीय गणित-विज्ञान मेला

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित 19वं अखिल भारतीय गणित-विज्ञान मेले का आयोजन सरस्वती विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक आवासीय विद्यालय, भोपाल में दिनांक 03 से 06 नवम्बर 2022 तक आयोजित हुआ।

भोपाल में अखिल भारतीय गणित विज्ञान मेले का आयोजन

भोपाल। सरस्वती विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक आवासीय विद्यालय, भोपाल में 3 नवम्बर से 6 नवम्बर तक 19वें अखिल भारतीय गणित-विज्ञान मेले का आयोजन किया गया। मेले में सभी 11 क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व रहा। संख्यात्मक दृष्टि से 321 छात्र, 184 छात्राएँ, 11 आचार्यों एवं 5 महिला आचार्यों ने 10 प्रकार की प्रतियोगिताओं में सहभागिता की। प्रतिभागियों को बाल, किशोर, तरूण एवं आचार्य श्रेणी में विभाजित किया गया। चारों श्रेणियों की विभिन्न प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में भोपाल महानगर की 30 शैक्षिक संस्थाओं से 137 शिक्षक उपस्थित हुये। विद्या भारती से सम्बद्ध 13 विद्यालयों, 9 समविचारी विद्यालयों व 9 सी.बी.एस.ई. विद्यालयों के 1634 छात्रों एवं शिक्षकों ने मेले का अवलोकन किया।

मेले का उद्घाटन मध्य प्रदेश के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ओमप्रकाश सकलेचा, राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी एवं विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्रीराम आरावकर जी ने किया।

वैदिक गणित प्रदर्शनी के उद्घाटन में विद्या भारती के संगठन मंत्री मा. गोबिन्द चन्द्र महंत, क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा. भालचन्द्र रावले व मा. देवेन्द्र राव देशमुख जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। विज्ञान प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री मा. यतीन्द्र जी शर्मा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक डॉ. अशोक जी पाण्डेय व माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्य प्रदेश की उपाध्यक्षा डॉ. रमा मिश्रा की विशिष्ट उपस्थिति रही। समापन समारोह में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय के कुलपति सुरेश कुमार जी जैन, आंचलिक विज्ञान केन्द्र के परियोजना समन्वयक साकेत सिंह कौरव जी व विद्या भारती के अखिल भारतीय मंत्री शिवकुमार जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मेले की विशिष्ट गतिविधि विज्ञान वार्ता में विद्या भारती के पूर्व छात्र व विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र त्रिवेन्द्रम के वरिष्ठ वैज्ञानिक निशंक कुमार जी श्रीवास्तव व मध्य प्रदेश के स्कूल शिक्षा राज्य मंत्री इंदर सिंह जी परमार, विद्या भारती के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र कान्हेरे जी उपस्थित रहे।

33 वां अखिल भारतीय खेलकूद समारोह, कुरुक्षेत्र

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की 33 वीं राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता 19 से 23 नवंबर 2022 तक गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र में आयोजित की गयी । इस राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता में देश के कोने-कोने से विद्या भारती के सभी 11 क्षेत्रों से 728 खिलाड़ी ,125 निर्णायक एवं 150 संरक्षक आचार्य सहित लगभग 1000 प्रतिभागियों की भागीदारी रही। इस आयोजन के निमित्त 18 नवंबर को गीता निकेतन आवासीय विद्यालय के परिसर में एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया जिसमें विद्या भारती के अखिल भारतीय खेल प्रभारी एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्रीमान हेमचंद्र जी ने विद्या भारती के लक्ष्य एवं उद्देश्य को स्पष्ट किया तथा बताया कि विद्या भारती के विद्यालयों में संस्कार युक्त शिक्षा के साथ-साथ अनुशासित खेल भावना से खेलने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाता है । उन्होंने बताया कि विद्या भारती के खिलाडी छात्रों ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई खेलों में श्रेष्ठ स्थान हासिल करके देश एवं विद्या भारती का नाम गौरवान्वित किया है। राष्ट्रीय खेल समारोह के निर्विघ्न आयोजन के लिए 19 नवंबर को प्रातः 11:00 बजे कुरुक्षेत्र स्थित प्रसिद्ध शक्तिपीठ मां भद्रकाली मंदिर से एक भव्य ज्योति यात्रा का आयोजन विद्या भारती के कुरुक्षेत्र संकुल के विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। मां भद्रकाली से ज्योति लेकर उस ज्योति को खेल मैदान में स्थापित किया गया, जो खेल समारोह की समाप्ति तक अखंड प्रज्वलित होती रही।

20 नवंबर को हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय द्वारा इस खेल समारोह का विधिवत उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि विद्या भारती एक ऐसा गैर सरकारी शिक्षण संस्थान है जो चरित्रवान, गुणवान एवं राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत बालकों का निर्माण करने में लगी है । विद्या भारती के विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी देश एवं समाज निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, उन्होंने कहा कि खेलकूद से छात्रों का शारीरिक व मानसिक विकास होता है स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है और मस्तिष्क स्वस्थ होगा तो चरित्र भी स्वस्थ होगा। इस उद्घाटन अवसर पर विशिष्ट अतिथि विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र जी ने उद्घाटन समारोह के प्रस्तावित भाषण में कहा 1988 में विद्या भारती ने खेल की 4 विधाओं के साथ प्रथम राष्ट्रीय खेलकूद समारोह ग्वालियर में आयोजित किया था तब मात्र ढाई सौ छात्र इस समारोह में आए थे इस वर्ष जब विद्या भारती 33 वां राष्ट्रीय खेल समारोह मना रही है तो 65 खेल विधाओं में 11000 छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रीय स्तर पर भाग लिया है। उन्होंने कहा कि विद्या भारती का मानना है कि शिक्षा मात्र परीक्षा के लिए नहीं व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण के लिए होनी चाहिए। खेलकूद समारोह के बीच में 21 नवंबर को एक सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया जिसमें हरियाणा

के शिक्षा मंत्री कुँवरपाल गुर्जर मुख्य अतिथि के रुप में पधारे।
23 नवंबर को भव्य एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण के साथ इस 33वें खेलकूद समारोह का समापन हुआ। समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता जी ने कहा कि एक खिलाड़ी मैदान में जो खेल भावना एवं टीम भावना दिखाता है वह जीवन भर उसके काम आता है। गीता जयंती के दौरान कुरुक्षेत्र की धर्म स्थली में राष्ट्रीय खेल समारोह के आयोजन के लिए उन्होंने विद्या भारती एवं गीता निकेतन आवासीय विद्यालय कुरुक्षेत्र को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में तो विद्या भारती ने कीर्तिमान स्थापित किए ही हैं लेकिन खेलों के क्षेत्र में भी विद्या भारती अथक प्रयास कर रही है। मुख्य अतिथि द्वारा इस खेल समारोह के समापन की घोषणा के पश्चात विद्या भारती के अखिल भारतीय खेल संयोजक ने ध्वजावतरण किया तथा उत्तर क्षेत्र के महामंत्री देशराज जी द्वारा इस खेल ध्वज को राष्ट्रीय संगठन मंत्री गोबिंद चंद्र महंत जी को प्रदान किया गया जिन्होंने अगले वर्ष के खेल समारोह के आयोजन के लिए इस खेल ध्वज को उत्तर पूर्व क्षेत्र बिहार के खेल संयोजक को प्रदान किया। विद्या भारती के अगले 34 वें राष्ट्रीय खेल समारोह उत्तर पूर्व क्षेत्र बिहार में आयोजित किए जाएंगे। पांच दिनों तक चले इस खेल समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में अंतरराष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी ओलंपिक पदक विजेता पहलवान, पद्मश्री योगेश्वर दत्त, भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान रितु रानी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा , कुरुक्षेत्र विधायक सुभाष सुधा के अलावा विद्या भारती के सह संगठन मंत्री श्रीराम आरावकर, अखिल भारतीय खेल संयोजक मुखतेज सिंह बदेशा, दुर्ग सिंह राठौर सहित विद्या भारती के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर के कई अधिकारी भी मौजूद रहे। 242 अंकों के साथ सर्वश्रेष्ठ खेल पुरस्कार की ट्रॉफी पूर्वी उत्तर प्रदेश ने प्राप्त की। पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के तरुण वर्ग के छात्र मनीष कुमार यादव एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बाल वर्ग के छात्र अनुज कुमार सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किए गए। अनुशासन का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार भी पूर्वी उत्तर प्रदेश ने प्राप्त किया। अन्य पुरस्कारों में छात्राओं के बाल वर्ग में सर्वश्रेष्ठ खेल का प्रथम पुरस्कार दक्षिण मध्य क्षेत्र, द्वितीय पुरस्कार पश्चिमी

जारी...

उत्तर प्रदेश क्षेत्र एवं तृतीय पुरस्कार पश्चिमी क्षेत्र ने प्राप्त किया। छात्राओं के किशोर वर्ग में सर्वश्रेष्ठ खेल का प्रथम पुरस्कार पूर्वी उत्तर प्रदेश, द्वितीय पुरस्कार मध्य क्षेत्र एवं तृतीय पुरस्कार दक्षिण मध्य क्षेत्र को प्राप्त हुआ। छात्राओं के ही तरुण वर्ग में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार की सूची में प्रथम स्थान पश्चिम क्षेत्र, द्वितीय स्थान दक्षिण मध्य क्षेत्र और तृतीय स्थान पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र का रहा। छात्रों के बाल वर्ग में प्रथम स्थान पश्चिमी उत्तर प्रदेश, द्वितीय स्थान उत्तर पूर्व क्षेत्र एवं तृतीय स्थान पूर्वी उत्तर प्रदेश ने प्राप्त किया। छात्रों के किशोर वर्ग में पूर्वी उत्तर प्रदेश प्रथम, पश्चिमी उत्तर प्रदेश द्वितीय एवं मध्य क्षेत्र तृतीय स्थान पर रहा। छात्रों के तरुण वर्ग में प्रथम स्थान पर पूर्वी उत्तर प्रदेश, द्वितीय स्थान पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं तृतीय स्थान दक्षिण मध्य क्षेत्र ने प्राप्त किया ।

ई-पाठशाला का शुभारंभ

चुनौतियों को स्वीकार कर सकारात्मक विमर्श के लिए कार्य करें ई-पाठशाला : श्री शिवकुमार

मथुरा। विद्या भारती के अखिल भारतीय मंत्री श्री शिवकुमार जी ने कहा कि तकनीकी युग में अच्छे विचारों को ई-पाठशाला के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाकर समाज में सकारात्मक वातावरण बनाया जा सकता है। समाज जीवन में आज अनेक प्रकार की चुनौतियां हैं और उन चुनौतियों को ध्यान में रखकर परिणामकारी विषय प्रस्तुति की आवश्यकता है। वृंदावन रोड स्थित माधवकुंज में विद्या भारती ब्रज प्रदेश के जनसंचार केंद्र "माधव संवाद केंद्र" पर अधिगम 360° ई-पाठशाला के शुभारंभ पर श्री शिवकुमार जी ने कहा कि बच्चों, अभिभावकों, प्रबंध समिति तथा समाज के अन्य वर्गों के लिए भी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की योजना बनानी होगी। आज सूचना आधारित ज्ञान की भरमार है जबकि आवश्यकता है ज्ञान आधारित शिक्षा की। हमें इस चुनौती को स्वीकार करना होगा। प्रांत संवाददाता डॉक्टर रामसेवक जी ने प्रस्तावना में ई-पाठशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 : एक स्वागत योग्य पहल

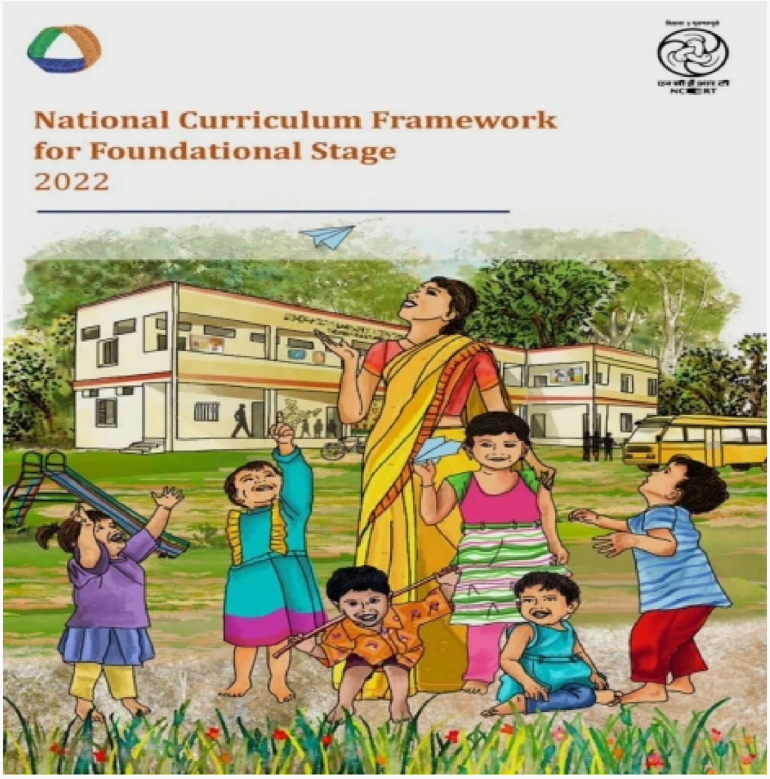

माननीय केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान द्वारा आज घोषित बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा भारत के शिक्षा क्षेत्र के लिए न केवल एक अभिनव पहल है, बल्कि देश की भावी पीढ़ियों को और अधिक सक्षम बनाने का मार्ग है। अभी तक सरकार की दृष्टि में स्कूली शिक्षा की शुरुआत पहली कक्षा से होती थी किन्तु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत बुनियादी स्तर की शिक्षा को भी औपचारिक शिक्षा का अंग माना गया है। अभी तक सरकार की आँगनबाड़ी, बालबाडियों में तथा पब्लिक/प्राइवेट स्कूलों में प्ले वे या नर्सरी -के.जी. के नाम पर चलने वाली ये कक्षाएं अब औपचारिक शिक्षा का भाग मानी जायेंगी और इन बाल वाटिकाओं के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्धारण और घोषणा एक सुविचारित एवं बहुप्रतीक्षित कदम है।

शैक्षिक गुणवत्ता विकास की प्राथमिकताओं तथा विकास लक्ष्यों की दृष्टि से इस पाठ्यचर्या रूपरेखा में दो विशिष्ट बातों का समावेश किया गया है। पहला है, शिक्षा के माध्यम से शिशु के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास अर्थात केवल किताबी पढ़ाई और परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बजाय उसके व्यक्तित्व के सभी अंगों का विकास हो, यानी उसका शरीर सबल-सुपुष्ट-सुडौल-नीरोगी हो, उसकी प्राणशक्ति तथा ऊर्जा का स्तर प्रबल हो, उसका मन शान्त और एकाग्र हो, उसकी बुद्धि विवेकपूर्ण यानी अच्छे-बुरे, सही-गलत का निर्णय करने में सक्षम हो तथा उसकी प्रवृत्ति में नैतिकता तथा आध्यात्मिकता का समावेश हो। भारतीय ज्ञान परम्परा में इसे पंचकोशात्मक विकास कहा गया है जिसके अनुसार मनुष्य को केवल देह नहीं वरन् शरीर-प्राण-मन-बुद्धि-आत्मा का समुच्चय माना गया है।

दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है, समग्र विकास की संकल्पना । उपर्युक्त सर्वांगीण विकास से व्यक्ति के व्यक्तित्व का तो विकास होगा किन्तु व्यक्ति आत्मकेन्द्रित हो कर रह गया तो उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास तो नहीं कहा जा सकेगा। व्यक्ति के रूप में जन्म लेकर उसकी संवेदना एवं दायित्वबोध उसके परिवार-समाज-राष्ट्र-मानवता तथा अन्ततः सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति हो, यह दैवीय भाव विकसित किया जाना शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए। दुनिया भर के शिक्षाशास्त्री इन विकास लक्ष्यों से सहमत हैं। धारणाक्षम विकास लक्ष्य (सस्टेनेबिल डेवलपमेन्ट गोल्स) के रूप में यूनेस्को ने भी इन विकास लक्ष्यों की प्राप्ति का आग्रह किया है। प्रसिद्ध अन्तरराष्ट्रीय शिक्षा आयोग - डेलर्स कमीशन (1996) ने भी प्रकारान्तर से विश्व भर के शिक्षाविदों और सरकारों का ध्यान इन बिन्दुओं की ओर आकर्षित किया था।

तीन से छह वर्ष के बच्चे इस समूह में आते हैं। उनके लिए शिक्षा की प्रचलित पद्धति - पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, कक्षा शिक्षण, गृहकार्य, परीक्षा सफल नहीं हो सकती। इस आयु वर्ग के शिशु अपनी मर्जी के मालिक होते हैं। विद्यालय के अनुशासन और व्यवस्थाओं को नहीं जानते - समझते। उनको सिखाना है तो पद्धति रोचक और आनन्ददायक होनी चाहिए। इस दृष्टि से तीसरी उल्लेखनीय बात जिसकी ओर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा ने विशेष संकेत किया है, वह है - खेल-खेल में सिखाना, खिलौनों के माध्यम से, गतिविधियों के माध्यम से और आनन्द देने वाले कक्षा कक्ष और मैदान के कार्यक्रमों के माध्यम से सिखाना। इससे बच्चे सीखने को बोझ की तरह न समझकर मौज मस्ती में सीखेंगे, रटने की प्रवृत्ति से बचेंगे और पढ़ाई तथा स्कूल के प्रति उनके मन में बचपन से जो भय विकसित होता है, उससे वे बचे रहेंगे। वास्तव में, पढ़ाई से डरने वाले यही बच्चे बाद में ड्रॉप आउट्स होते हैं।

स्वतंत्रता के 75 वर्ष तथा 1986 में घोषित नई शिक्षा नीति के 35 वर्ष बाद भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन होने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। विगत 70 वर्षों से शिक्षा क्षेत्र में निरन्तर कार्यरत संगठन के रूप में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान आज घोषित बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022 का स्वागत करता है तथा माननीय प्रधानमंत्री एवं माननीय शिक्षामंत्री, तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रारूप तैयार करने में जिनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, ऐसे प्रख्यात वैज्ञानिक-शिक्षाविद डॉ. के. कस्तूरीरंगन तथा उनकी पूरी टीम का हार्दिक अभिनंदन करता है। साथ ही, संस्थान इसके क्रियान्वयन में पूर्ण सहयोग करने की भी आश्वस्ति देता है।

- डी. रामकृष्ण राव
(अखिल भारतीय अध्यक्ष, विद्या भारती)

वैचारिक लेख

महामना मदनमोहन मालवीय का दीक्षान्त भाषण – 14 दिसम्बर 1929

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अपना कार्य अक्टूबर, 1917 में प्रारम्भ किया था। विश्वविद्यालय के बारहवें उपाधि-वितरण समारोह (14 दिसम्बर 1929 ई०) के अवसर पर महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा दिया गया दीक्षान्त भाषण सम्पूर्ण शिक्षा जगत के लिए मार्गदर्शक ग्रंथ जैसा है।

भारत की प्राचीन गुरुकुल-आधारित शिक्षा पद्धति और तत्कालीन कालखण्ड में प्रचलित यूरोपीय शिक्षा प्रणाली से भारतीय पद्धति की तुलना, शिक्षा का माध्यम, संस्कृत शिक्षा का महत्व, विज्ञान-कला-कौशल-व्यवसाय-तकनीक आदि की शिक्षा, स्त्री-शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा आदि समाज जीवन के व्यावहारिक पक्ष से जुड़ी प्रत्येक बात पर महामना इस व्याख्यान में अपने विचार प्रकट करते हैं। राष्ट्र-निर्माण के लिए शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए वे शारीरिक शिक्षा, चरित्र निर्माण और देशभक्ति की शिक्षा को सर्वाधिक आवश्यक मानते हैं।

महामना इस भाषण का प्रारम्भ विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों तथा आदर्शों का विवरण देते हुए करते हैं। वे तक्षशिला और नालंदा के प्राचीन विद्यापीठों की उच्चतम प्रणाली के पुनरुत्थान के माध्यम से श्रेष्ठतम संस्कृति की प्रणाली के अनुकरण के साथ कला, विज्ञान तथा शिल्प की नवीनतम प्रगति का भी संयोजन करना चाहते हैं। **विश्वविद्यालय की स्थापना के समय प्रमुख रूप से ये चार ध्येय थे** –

1. संस्कृत भाषा तथा शास्त्रों के अध्ययन द्वारा भारतवर्ष की संस्कृति के श्रेष्ठ तत्त्वों का सर्वसाधारण में प्रचार।
2. कला और विज्ञान की सर्वतोमुखी शिक्षा तथा अनुसंधान।
3. भारत में उद्योगों की प्रगति के लिए शिल्प, कला-कौशल तथा व्यवसाय सम्बन्धी ज्ञान की वृद्धि।
4. धर्म और नीति की शिक्षा के माध्यम से युवकों में सदाचार और चरित्र निर्माण की प्रेरणा देना।

मालवीय जी भारत की पैतृक परम्पराओं में संस्कृत भाषा को सर्वाधिक बहुमूल्य मानते हैं क्योंकि इस भाषा में भारत का श्रेष्ठ तत्त्व ज्ञान तथा साहित्य लिखा गया है। उनका मानना है कि, “प्रत्येक मनुष्य अपनी व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और चरित्र सम्बन्धी उन्नति किस प्रकार कर सकता है तथा कैसे अपने को एक शक्तिशाली समाज में संघटित कर सकता है, इसका पूर्ण विवेचन इसी भाषा में मिलता है। भाषा की उत्तमता की दृष्टि से भाषा-मर्मज्ञों ने संसार की सभी भाषाओं में संस्कृत को ही प्रथम स्थान दिया है।”

महामना काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को ‘नवीन राष्ट्रीय विद्या मंदिर’ कहते हैं। इसीलिए वे ‘शताब्दियों से चली आ रही भारत की अटूट आध्यात्मिक परम्पराओं की रक्षा तथा प्राचीन और वर्तमान के सुन्दर संयोग से परम्परा-सिंचित राष्ट्रीय निधि का सुन्दर उपयोग’ करने की बात करते हैं। संस्कृत भाषा की शिक्षा से वे केवल दर्शन-अध्यात्म नहीं, बल्कि गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद और साहित्य के क्षेत्र में भी अपने विद्यार्थियों को उन्नत बनाना चाहते हैं।

शिक्षा का माध्यम

महामना शिक्षा के माध्यम के रूप में केवल मातृभाषा को ही उचित मानते हैं। ध्यान दीजिए, यह भाषण वर्ष 1929 का है, जब अंग्रेजों का शासन भारत पर था और किसी भारतीय के लिए उन्नति का मार्ग अंग्रेजी से होकर ही जाता था, इसके विपरीत महामना चिंता व्यक्त करते हैं कि शिक्षा क्षेत्र में अंग्रेजी का प्रयोग व्यापक रूप से होने के कारण भारतीय भाषाओं को भुलाया जाने लगा है।

महामना को इस बात का गौरव है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी में एम.ए. की उपाधि के लिए विषय के रूप में मान्यता है तथा यहाँ विद्वानों का एक समूह कला, विज्ञान तथा आयुर्विज्ञान विषयों की पाठ्यपुस्तकों की रचना हिन्दी में कर रहा है।

कला और विज्ञान: शिक्षा तथा अनुसंधान

मालवीय जी कला तथा विज्ञान की सार्वजनिक शिक्षा में वृद्धि तथा नवीन आयामों पर अनुसंधान के पक्षधर थे। यह बात हम शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए व्यक्तियों के लिये आश्चर्यजनक और आनन्ददायक है कि 1929 ई0 में, जब देश में शिक्षा क्षेत्र बहुत विकसित नहीं था, तब भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एम.ए. तथा एम.एस-सी. कक्षाओं तक प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति, समाजशास्त्र, दर्शन तथा मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि मानविकी के विषयों; हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, मराठी, बंगला आदि भाषाओं तथा गणित, ज्योतिष विज्ञान, भौतिकी तथा रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, जीव विज्ञान तथा भूगर्भशास्त्र जैसी विज्ञान की शाखाओं के शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम की रचना की जा चुकी थी। न केवल शिक्षण, अपितु प्रयोग तथा अन्वेषण-अनुसंधान के काम के लिए व्यवस्थित पुस्तकालय तथा प्रयोगशालाओं की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय में थी। सक्षम शिक्षकों की अगली पीढ़ी तैयार करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था मालवीय जी की दूरदृष्टि की ओर संकेत करती है। इसके साथ ही विधि महाविद्यालय भी है, ताकि जो विद्यार्थी वकालत के क्षेत्र में जाना चाहते हैं, उनके लिए भी शिक्षा की समुचित व्यवस्था हो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का आयुर्वेद कॉलेज भी वर्ष 1929 के पहले कार्यशील हो चुका था।

स्त्री शिक्षा

मालवीय जी समाज के संतुलित विकास के लिए स्त्री शिक्षा की समुचित व्यवस्था को अनिवार्य मानते थे। इस दीक्षान्त भाषण में भी वे इसकी चर्चा करते हैं। **जारी...**

1929 ई. में, जब भारत में सामान्य भारतीय समाज में स्त्रियों के लिए शिक्षा दुर्लभ थी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में महिला विद्यालय प्रारम्भ किया जा चुका था जिसके साथ एक सौ छात्राओं के ठहरने की व्यवस्था से युक्त अलग छात्रावास था, जिसकी प्रबन्धक तथा एफ.ए. (सीनियर सेकण्डरी) स्तर तक की छात्राओं के शिक्षण के लिए चार महिला शिक्षिकाएं भी थीं। स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं की छात्राएँ सभी विषयों की शिक्षा पा सकती थीं। मालवीय जी केवल स्त्री शिक्षा के पक्ष में व्याख्यान नहीं देते बल्कि एक समुचित व्यवस्था खड़ी करके समाज के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित करते हैं।

कला-कौशल तथा व्यावसायिक शिक्षा

रोजगारपरक शिक्षा, अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता देने वाली शिक्षा, कला-कौशल तथा उद्योग-धंधे की शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा, आज सब दूर शिक्षाविदों, सरकारों तथा नीति-निर्माताओं के बीच चर्चा और चिन्तन के विषय बने हुए हैं। किन्तु आज से लगभग एक शताब्दी वर्ष पूर्व महामना इस दिशा में विचार कर अभियांत्रिकी का एक महाविद्यालय प्रारम्भ कर चुके थे। विद्यार्थियों के शिक्षा पूर्ण करने के बाद स्वाभिमानपूर्ण स्वावलम्बी जीवन जीने के योग्य बनाने के लिए तो मालवीय जी व्यावसायिक शिक्षा की बात करते ही हैं किन्तु उनका यह विचार विद्यार्थियों के व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ राष्ट्र जीवन से भी जुड़ा हुआ। इस दीक्षान्त व्याख्यान में वे कहते हैं, "प्रयोगात्मक ज्ञान के साथ विज्ञान, कला-कौशल तथा व्यवसाय सम्बन्धी ऐसी शिक्षा विद्यार्थियों को दी जाये, जिससे देश में उद्योग-व्यवसाय तथा घरेलू धंधों की उन्नति हो।"

इससे मालवीय जी की दूरदर्शिता तथा समय के आगे चलने की सोच स्पष्ट होती है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में यंत्र-बिजली की इंजीनियरिंग की शाखाएँ तो थीं ही, धातु-विज्ञान तथा औद्योगिक रसायन विज्ञान विभाग भी स्थापित हो चुका था जोकि तब तक विश्व के अनेक देशों की उच्च शिक्षा संस्थाओं में प्रारम्भ नहीं हुए थे। मालवीय जी इस बात का गौरव अनुभव करते हैं कि भारत में किसी भी अन्य विश्वविद्यालय में इन विषयों की सुविधा उपलब्ध नहीं है किन्तु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने इस दिशा में पहल की है। वे इसमें छात्रों की कठोर चयन-प्रक्रिया, उच्च शैक्षिक गुणवत्ता और उच्च परिणामों को लेकर भी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं।

वे उल्लेख करते हैं कि व्यावहारिक विज्ञान की शिक्षा केवल

पुस्तकीय न रह जाये। इसके लिए इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष एक निश्चित अवधि के लिए रेलवे, कारखानों और खदानों में काम होते हुए देखने तथा प्रत्यक्ष कार्य करके सीखने के लिए भेजा जाता है। इसका परिणाम है कि इस इंजीनियरिंग कॉलेज से उपाधि प्राप्त कर समाज जीवन में गए विद्यार्थियों को उनकी प्रयोग-कुशलता के कारण बिजली-उत्पादन, रेलवे तथा खनन सम्बन्धी उद्योगों में सरलता से नियुक्ति मिल जाती है।

अपने लिए विचार करने की बात है कि पिछली शताब्दी का यह तीसरा दशक था। तब तक भारत में न तो देशभर में रेलवे लाइनें पहुँची थीं और न ही बिजली उत्पादन, वितरण तथा बिजली से चलने वाले उपकरणों का निर्माण करने वाले उद्योगों की बड़ी संख्या थी। परन्तु भविष्य के भारत को दृष्टि में रखते हुए मालवीय जी ने इंजीनियरिंग के इन विषयों और उनके प्रयोग कौशल को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में स्थान दिया। इसी प्रकार, औद्योगिक एवं व्यावसायिक रसायन विज्ञान की शिक्षा के विषय में मालवीय जी कहते हैं कि यह विभाग ऐसे युवाओं को तैयार कर रहा है जो रोजगार के लिए नौकरी खोजने के बजाय स्वयं का लघु-घरेलू उद्योग प्रारम्भ कर सकेगा। इससे जहाँ स्व-रोजगार को बढ़ावा मिलेगा, वही महामना के समाज-चिंतन की दूसरी दिशा को भी बल मिलेगा, अर्थात् देशी घरेलू उद्योगों तथा व्यवसायों का विकास होगा। युवा वर्ग में स्वयं के परिश्रम से जीविका उपार्जन करने का स्वभाव बनेगा, श्रम के प्रति निष्ठा बढ़ेगी, स्वाभिमान का उदय होगा।

दीक्षान्त भाषण में महामना कहते हैं, "निर्धनता और बेकारी का प्रश्न जटिल होता जा रहा है। इसका हल करना नितान्त आवश्यक है। मेरी समझ में यदि नवयुवकों को व्यावसायिक तथा व्यावहारिक विज्ञान की शिक्षा दी जाये तो यह समस्या बहुत अंशों में हल हो सकेगी। वे बड़ी तनख्वाह वाली सरकारी नौकरियों की मृगतृष्णा अथवा पहले से ही ठसाठस भरे हुए पेशों की ओर न झुकें।" रोजगारपरक शिक्षा का जो अर्थ आज 'सरकारी नौकरी' को माना जाने लगा है, उसका स्वावलम्बन पूर्ण आयाम मालवीय जी सुझाते हैं।

इस बात को मालवीय जी भारत की अर्थव्यवस्था के स्वावलम्बन से भी जोड़ते हैं। वे आगे कहते हैं, "इस प्रकार हम धीरे-धीरे विदेशी वस्तुओं के आयात को कुछ अंशों में कम कर सकेंगे तथा देश से बाहर जाने वाले अपने कच्चे माल को भी रोक सकेंगे। इस क्षेत्र में उपयुक्त शिक्षा के द्वारा सरकार से राष्ट्रीय व्यवसाय की वृद्धि के लिए थोड़ी सी सहायता प्राप्त करके दस हजार भारतीयों को प्रतिवर्ष रोजगार दिया जा सकता है।" यह मालवीय जी का भारत की अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर तथा स्वत:पूर्ण बनाने का स्वप्न है। इसके लिए वे सरकार और विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

चरित्र निर्माण की शिक्षा

महामना कहते हैं, "विश्वविद्यालय का चौथा ध्येय धर्म और नीति को शिक्षा का आवश्यक अंग मानकर विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण है। ... हम धर्म को चरित्र निर्माण का सीधा मार्ग और सांसारिक सुख का सच्चा द्वार मानते हैं। हम देशभक्ति को सर्वोत्तम शक्ति मानते हैं, जो मनुष्य को उच्च कोटि की निःस्वार्थ

जारी...

सेवा करने की ओर प्रवृत्त करती है।" आज जहाँ समाज जीवन में धर्म की व्याख्या को लेकर विवाद हों, एक धार्मिक आस्था को अन्य आस्था की तुलना में श्रेष्ठ या कमतर बताया जाता हो, महामना के ये उदात्त विचार शिक्षा के लिए मार्गदर्शी सिद्धान्त हैं। मालवीय जी चरित्र निर्माण की शिक्षा के लिए धार्मिक-पौराणिक आख्यानों, नीति विषयक कथाओं, पूर्वज महापुरुषों के जीवन प्रसंगों को छात्रों को सुनाया जाना आवश्यक मानते हैं ताकि उनमें अपने राष्ट्रीय महापुरुषों तथा जीवन-मूल्यों के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न हो सके।

सुसंगठित जीवन का आधार – शारीरिक व्यायाम

मालवीय जी नैतिकता और चरित्र निर्माण के लिए केवल धार्मिक शिक्षा से संतोष नहीं करते। वे शारीरिक व्यायाम, खेलकूद, साहित्य-संस्कृति से सम्बन्धित विषयों तथा कार्यक्रमों को युवाओं के सम्पूर्ण चरित्र गठन के लिए आवश्यक मानते हैं। वे बताते हैं कि उस समय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययनरत 2600 विद्यार्थियों में से 1600 विद्यार्थी छात्रावासों में रहते हैं। शिक्षकों के आवास भी छात्रावास में ही हैं। व्यवस्था इस प्रकार से की गई है कि शिक्षक और विद्यार्थी परस्पर सम्पर्क में रहकर उन्नति के प्रयास करें। सहजीवन के माध्यम से जीवन की शिक्षा का मालवीय जी का यह अभिनव प्रयोग है।

वे उपस्थित जनसमुदाय को इसकी उपयोगिता बताते हैं, "छात्रों ने स्वयं अपनी सामाजिक तथा साहित्यिक सभाएँ, नाटक-मण्डलियों तथा खेल-समितियों और विश्वविद्यालय की राज्य-परिषद् की स्थापना की है। इस पार्लियामेंट में उन्हें सभी प्रकार के राजनीतिक, सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर बहस करने का पूर्ण अधिकार है। वे अनेक प्रकार के खेलों का आयोजन करते हैं, अपने कप्तानों को चुनते हैं और अपना हिसाब-किताब स्वयं रखते हैं। कुछ विद्यार्थी विश्वविद्यालय की सैनिक शिक्षा दल के सदस्य हैं जहाँ उन्हें उत्तम रीति की सैनिक शिक्षा दी जाती है। वातावरण शुद्ध और समृद्धिकारी है। गुरुओं से शिक्षा प्राप्त करने के अतिरिक्त प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं अपना गुरु है तथा अपने सहपाठियों को भी शिक्षा देता है। आत्मगौरव का भाव इस प्रकार विद्यार्थियों में बढ़ रहा है जो भविष्य के लिए अच्छा शकुन है।"

मालवीय जी का यह विचार स्पष्ट करता है कि सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए केवल पुस्तकीय शिक्षा का पाठ्यक्रम ही पर्याप्त नहीं बल्कि जीवन के विविध पक्षों का संतुलित संयोजन ही युवाओं को जीवन की दिशा देता है। इसीलिए वे औद्योगिक-व्यावसायिक शिक्षा, चरित्रनिर्माण की शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, सैनिक शिक्षा तथा साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों, सभी को शिक्षा का अपरिहार्य अंग मानते हैं और इन सभी के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उन्होंने समुचित व्यवस्था की हुई है।

- अवनीश भटनागर
(अखिल भारतीय महामंत्री, विद्या भारती)

महिला समन्वय अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग, भाग्यनगर

तेलंगाना | महिला समन्वय अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग (11-13 नवंबर, 2022) भाग्यनगर, तेलंगाना में दो सत्रों में संपन्न हुआ।

इस वर्ग में विद्या भारती से चार दीदियां एवं एक बंधु निम्नानुसार सम्मिलित हुए ।

1. डॉ. श्री किशन वीर सिंह
2. सुश्री रेखा चूड़ासामा
3. सुश्री प्रमिला शर्मा
4. सुश्री पवित्रा दहाल
5. श्रीमती सुनीता पांडेय्

संगठन मंत्र के बाद मीनाक्षी ताई ने अपने उद्बोधन में बताया कि 24 प्रांतों में महिला समन्वय की संयोजिका एवं प्रचार प्रमुख हैं। इस वर्ष देश भर के 350 विभागों में महिला सम्मेलन का कार्यक्रम हो इस हेतु यह अभ्यास वर्ग है। हमें समझदारी से महिला विषयक विषयों को लेकर आगे बढ़ाना है। राष्ट्र प्रथम इस भाव से कार्यक्रम करना है ।

मा. भैया जी जोशी, कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कहा कि इस शताब्दी वर्ष में पांच प्रमुख कार्य समरसता, कुटुंब व्यवस्था ,स्वदेशी भाव ,पर्यावरण, आदर्श नागरिकता इन विषयों को लेकर हम सभी कार्य करें, ऐसा आह्वान किया।

समापन में मा.मीनाक्षी ताई पेशवे का उद्बोधन प्राप्त हुआ तथा प्रश्नोत्तरी के माध्यम से माननीय दत्तात्रेय होसबाले, कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सभी की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

सरस्वती विद्या मंदिर, गतीरौटपटना, कटक में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

तेजी से क्रियान्वयन में निहित है राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की सफलता

कटक । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और छात्र विकास के लिए समग्र मूल्यांकन पर 14वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 20-21 नवंबर, 2022 को सरस्वती विद्या मंदिर, गतीरौटपटना, कटक में किया गया। संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली का चेहरा बदल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षार्थियों के मूल्यांकन के लिए विद्यालय आधारित मूल्यांकन की सिफारिश की है। एनईपी की सफलता इसके तेजी से क्रियान्वयन में निहित है। प्रो. डॉ. पी.सी. अग्रवाल प्रिंसिपल आरआईई ने समग्र मूल्यांकन के विविध आयामों की व्याख्या करते हुए स्कूल आधारित मूल्यांकन सीसीई, 360 डिग्री प्रगति कार्ड आदि पर प्रकाश डाला। उन्होंने योगात्मक से रचनात्मक, सामग्री से योग्यता आधारित और निम्न से उच्च स्तर की समग्र मूल्यांकन की कौशल विकास प्रक्रिया में बदलाव पर चर्चा की। एनईपी की सफलता इसके तेजी से क्रियान्वयन में निहित है। डॉ. किशनवीर सिंह शाक्य पूर्व सदस्य यूपीपीएससी प्रयागराज और मंत्री विद्या भारती ने कहा कि मूल्यांकन में ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, चरित्र शामिल है।

डॉ. बीके पांडा, निदेशक, शास्त्रीय ओडिया शिक्षा मंत्रालय ने रचनात्मक, सहयोगी और महत्वपूर्ण कौशल को बढ़ाने के लिए रणनीतियों के संदर्भ में शिक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया में आध्यात्मिक इकाई को जोड़ा। डॉ. के.सी. मोहंती अध्यक्ष शिक्षा विकास समिति, उड़ीसा ने 12 समग्र मूल्यांकन रूप पर विशेष बल देते हुए बहुआयामी मूल्यांकन की नीति की सराहना की। संगोष्ठी में उत्कल विश्वविद्यालय, खलीकोट विश्वविद्यालय, रमादेवी विश्वविद्यालय, आरआईई, एफ.एम. विश्वविद्यालय, रेनशॉ विश्वविद्यालय, एस.बी. महिला कॉलेज, ओडिशा के उच्च शिक्षा संस्थान सीटीईएस और विभिन्न सरस्वती विद्या मंदिरों के आचार्य मौजूद रहे। दो दिवसीय संगोष्ठी में 51 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

संगोष्ठी में प्रफुल्ल कुमार मोहंती वीसी खलीकोट एकात्मक विश्वविद्यालय, प्रो. एच.के. सेनापति एनसीईआरटी, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक, डॉ. एस.के. हाटी, सचिव विद्या भारती पूर्व क्षेत्र, रमाकांत मोहंता, आयोजन सचिव, एसवीएस ओडिशा, डॉ. लतिका मिश्रा, सहायक निदेशक इग्नू, डॉ. सिद्धनाथ साहू, तारुलता देवी संयुक्त सचिव एसवीएस, ओडिशा आदि विशेष उपस्थित रहे।

महाकोशल प्रांत की प्रचार विभाग की बैठक

विद्या भारती महाकोशल प्रांत की प्रचार विभाग की बैठक 17 नवंबर 2022 को आयोजित की गई। इस अवसर पर प्रचार विभाग से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विद्या भारती के महामंत्री अवनीश भटनागर जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। बैठक में सरस्वती शिक्षा परिषद के सचिव डॉ. नरेंद्र कोष्टि, महाकोशल प्रांत के प्रचार प्रमुख ज्ञानेंद्र सिंह जी, सह प्रांत प्रमुख शिवानंद सिन्हा जी आदि उपस्थित रहे।

ग्राम विकास योजना, नालंदा, बिहार (सरस्वती संस्कार केन्द्र)

पू. त. ज. म. सरस्वती विद्या मंदिर, हसनपुर, राजगीर, बिहार द्वारा विगत 22 वर्षो से ग्राम विकास योजना के अंतर्गत सरस्वती संस्कार केन्द्र संचालित है। यहाँ शिक्षा, सेवा तथा संस्कार के अनेकों कार्य समाज के लिए किए जा रहें है। आज समाज में इसका सुखद परिणाम भी देखने को मिल रहा है। अनेकों महिलाएँ स्व-रोजगार का सृजन कर अपना जीवन-यापन कर रही है। अनेकों छात्रों ने संस्कार केन्द्र में आकर स्वयं को शिक्षित किया तथा साथ ही रोजगार प्राप्त करने में भी सक्षम हुए हैं। आज समाज में विद्यालय के प्रति अपनत्व का भाव बढ़ा है तथा इस विद्यालय को अपना विद्यालय कहकर पुकारते हैं। समय-समय पर कीर्तन मंडली के द्वारा मानस पाठ का आयोजन किया जाता है। विद्यालय के द्वारा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने हेतु बच्चों के द्वारा ग्रामों में खिचड़ी भोज व रक्षाबंधन में रक्षा सूत्र बाँधने का कार्य छात्रावासीय छात्रओं के द्वारा किया जाता है। आज संस्कार केन्द्रों की अपनी एक अलग पहचान इस क्षेत्र में बनी है। कोरोना काल के बाद क्षेत्र में फिर से संस्कार केन्द्र की योजना अनवरत चलने लगी है यह एक सुखद अवसर है।

वर्तमान समय में चल रहे नालंदा विभाग के संस्कार केन्द्र व आचार्य / शिशु का विवरण इस प्रकार है

कुल संस्कार केन्द्र 17 | कुल आचायों की संख्या 18 | कुल छात्रों की संख्या - 476

कार्य एवं उद्देश्य

- शिक्षा, सेवा एवं संस्कार के उद्देश्य से ग्रामों में कार्य।
- आध्यात्मिक भाव जागरण हेतु मानस पाठ कीर्तन मंडली, प्रवचन एवं शिव चर्चा।
- बालकों का नि:शुल्क शिक्षण।
- स्वावलंबन की ओर बढ़ता हमारा गाँव।
- महिला सशक्तिकरण तथा स्वरोजगार की ओर उन्मुख।
- महिला सिलाई प्रशिक्षण।
- हरा-भरा ग्राम हेतु वृक्षारोपण।
- खुली शौच के प्रति जागरूकता।
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की योजना से परिचित कराना।
- स्वच्छ ग्राम की संकल्पना।

उपलब्धियाँ

- बालकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का भाव।
- शिक्षा के प्रति रूचि, सामाजिक जागरण तथा सामाजकि कार्यो में सहयोग करना।
- धार्मिक पर्व / त्योहारों में स्वच्छता पर विशेष ध्यान यथा भजन / कीर्तन व प्रवचन।
- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस में सहभागिता।
- (सन् 2019 में 2000 महिलाओं की)
- राष्ट्रीय पर्वो में उत्साहपूर्वक झंडोतोलन।
- RTI के तथा बालकों का शिक्षण।

संपादित कार्यक्रम

- चित्रकला प्रतियोगिता।
- पहाड़ा सम्राट प्रतियोगिता।
- समरसता दिवस में खिचड़ी भोज।
- रक्षाबंधन उत्सव केन्द्रों पर।
- रामचरितमानस पाठ।

"ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा" की अखिल भारतीय बैठक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुकूल योजना बनाने पर बल

अमेठी। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान "ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा" की अखिल भारतीय बैठक का आयोजन 14 से 16 नवंबर तक सामभारती धम्मौर, अमेठी उत्तर प्रदेश में किया गया। बैठक में 9 क्षेत्रों के 29 प्रतिभागी, अधिकारी आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। विद्या भारती के अखिल भारतीय महामन्त्री अवनीश भटनागर जी का उद्घाटन उद्बोधन हुआ। ग्रामीण सेल की शिक्षा के छ: आयामों के वृत्त के साथ वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुकूल योजना बनाने पर बल दिया गया। समापन सत्र में विद्या भारती के अखिल भारतीय सहसंगठन मन्त्री माननीय यतीन्द्र जी का उद्बोधन प्राप्त हुआ।

कौशलपूर्ण शिक्षा का मूर्त रूप 'उमंग दीपावली हाट'

विद्या भारती भावी वर्तमान पीढ़ी को शिक्षा प्रदान करने के साथ सामाजिक सहयोग, समरसता, कर्तव्यभाव विकसित करते हुए रोजगारपरक शिक्षा भी प्रदान कर रहा है। इन्हीं सब उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्या भारती अनेक योजनाएं संचालित करता रहता है, जिसमें से एक है विद्यालय स्तर पर मेले का आयोजन। विद्या भारती की इसी योजना से प्रेरित होकर दुर्गावती हेमराज टाह सरस्वती विद्या मंदिर में भव्य मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन नरेंद्र कश्यप जी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), उत्तर प्रदेश सरकार और विद्या भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री डोमेश्वर साहू जी ने किया। मेले में खरीदारी करने के साथ आगंतुक विद्यार्थियों से संवाद भी करते दिखे। मेले का आकर्षण प्रमुख रूप से ढोल फॉर आल, फूड कोर्ट, म्यूजिकल चेयर, जादू शो, राजस्थानी और हरियाणवी लोकनृत्य, गेम्स जोन जिसमें 12 खेल पॉइंट थे आदि रहे। श्रीमान यतीन्द्र जी, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री विद्या भारती ने भी मेले का भ्रमण किया। विद्यार्थियों ने दीपावली मेले के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों को नियंत्रित करना, भिन्न-भिन्न लोगों से बात करना, संयम जैसे अनेक प्रकार के गुण सीखे जो व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी होंगे। मेले के उपरान्त प्रत्येक छात्र को उनसे लिए गए 500 रुपये व आय से प्राप्त प्रत्येक के लिए 110 रुपये कुल 610 रुपये दिए। इस मेले के माध्यम से विद्यालय महानगर के शिक्षा जगत, प्रशासन व अन्य विद्यालयों के संपर्क में आया। करीब 15 हजार लोगों ने मेले का भ्रमण किया। मेले में जो छात्र पिछले वर्षों में पास होकर गए थे वे तो आये ही लगभग 20 साल पहले जो छात्र पास होकर गए थे वे भी अपने परिवार सहित आए। शहर में रहने वाले विद्यालय के पूर्व छात्र-छात्राओं का संपर्क एक-दूसरे से संपर्क हुआ।

मेले की योजना, नामकरण एवं बजट

मेला लगाने के विचार के साथ यह बात तय हुई कि छात्रों को ही मेला लगाने की पूरी जिम्मेदारी दी जाए। छात्र विद्यालय स्तर पर आचार्य केवल मॉनिटरिंग करें और आवश्यकता पड़ने पर छात्रों का सहयोग करें। मेले का नाम 'उमंग दीपावली हाट' रखा गया। इसके बाद सिटी मजिस्ट्रेट ने अग्निशमन विभाग, यातायात विभाग और थाने से अनापत्ति प्रमाणपत्र प्राप्त करने के बाद मेला लगाने की अनुमति दे दी। मेले में टिकट का शुल्क 10 रुपये तय किया गया।

मेले का उद्देश्य - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का केंद्र बिन्दु छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। इसका अर्थ है कि जब तक छात्र अपनी स्कूली शिक्षा पूर्ण करे तब तक वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण, संवाद कौशल में निपुण, शारीरिक रूप से स्वस्थ व मजबूत, कुशल नेतृत्व करने वाला, विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय करने में सक्षम, जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने में दृढ़ व तकनीकी रूप से कुशल बन जाना चाहिए। विद्यालय स्तर पर मेला उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति का सशक्त माध्यम लगा।

पूर्व छात्र सम्मेलन, विद्या भारती महाकोशल प्रांत

श्रेष्ठ विचारों और संस्कारों से बड़ा बनता है व्यक्ति

सरस्वती शिक्षा परिषद जबलपुर में पूर्व छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व छात्रों ने कहा कि व्यक्ति धन से, उम्र से या अधिक शिक्षित होने से बड़ा नहीं बनता, बल्कि श्रेष्ठ विचारों और श्रेष्ठ संस्कारों से बड़ा बनता है। ये दोनों चीजें सरस्वती विद्यालयों से प्राप्त होती हैं। हमें गर्व है कि हम सरस्वती शिशु मंदिर में अध्ययन करके आचार्यों से प्राप्त ज्ञान और संस्कार के माध्यम से समाज जीवन में कार्य कर रहे हैं।

समाज के बीच उत्कृष्ट कार्य करने वाले पूर्व छात्र रंजीत पटेल, डॉ. विजय आनंद मरावी, आशीष ठाकुर, डॉ. हेमंत तिलगाम सारंग शिवहरे और बहन आर्या सेन को सम्मानित किया गया। आयोजन में विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्रीराम आरावकर, प्रादेशिक सचिव डॉ. नरेंद्र गोष्ठी, प्रांत कोषाध्यक्ष विष्णु कांत जी ठाकुर, ग्रामीण शिक्षा के प्रादेशिक सचिव डॉक्टर आदित्य मिश्रा, जिला सचिव विवेक जी चौधरी उपस्थित रहे।

विदेश में रहने वाले पूर्व छात्रों के सहयोग और सेवा इंटरनेशनल के माध्यम से मिले 5 High Frequency Ventilators

विदेश में रहने वाले पूर्व छात्रों के सहयोग और सेवा इंटरनेशनल के माध्यम से 5 High Frequency Ventilators श्रीमद्भगवदगीता विद्यालय, कुरुक्षेत्र पहुंचे। ये सुविधा जरूरतमन्द मरीज़ों को नि:शुल्क उपलब्ध रहेगी। पिछले वर्ष कोरोना की दूसरी लहर में चार Oxygen Concentrators अमेरिका और जापान से आये थे। इन्हें मरीजों को घर पर नि:शुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

विद्या भारती के सभी पूर्व छात्रों का निरंतर सामाजिक कार्यो में सहयोग के लिए आभार। सेवा इंटरनेशनल का विशेष आभार।

अखिल भारतीय प्रशिक्षण टोली की बैठक संपन्न

23 से 25 नवंबर 2022 तक सेवा धाम परिसर जयपुर में संपन्न अखिल भारतीय प्रशिक्षण टोली की बैठक

अखिल भारतीय नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा बैठक

रायपुर । विद्या भारती के लक्ष्य में नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के विकास पर विशेष बल दिया गया है। संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्य, पर्यावरण जागरूकता, स्वच्छता, नैतिकता इस प्रकार के गुणों का उल्लेख किया गया है। अच्छे विचारा का संग्रह हो तथा आचरण में प्रकटीकरण हो। समय, परिस्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम बदलते रहते हैं पर नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य कभी नहीं बदलते, ये शाश्वत हैं।

इसी संदर्भ में छत्तीसगढ़ के रायपुर में 11-12 नवंबर को नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर अखिल भारतीय बैठक का आयोजन किया गया। आकर्षक प्रवेश द्वार हो, बोध वाक्य लिखे हों, गुरुजनों को प्रणाम करते हुए छात्रों के चित्र बने हों, किसी कक्ष को नैतिक शिक्षा की दृष्टि से सुसज्जित करने का आह्वान किया गया। प्रकृति प्रेम, ईश्वर भक्ति, मित्रता, श्रम निष्ठा, दायित्व बोध, धैर्य, सत्यनिष्ठा आदि गुणों के विकास के लिए सतत प्रयास करने को कहा गया। बालक जब विद्यालय में प्रवेश लेता है तो आते समय उसके विचार क्या थे और जब वह विद्यालय से

जाता है तो उस समय उसके विचार व सोचने की दृष्टि क्या है, इसे भी लिखना चाहिए।

बैठक में विशेष रूप से अखिल भारतीय मंत्री एवं विषय प्रभारी डॉ. मधुश्री साव, अखिल भारतीय संयोजक रविशंक शुक्ल, क्षेत्र संयोजक सुरेश सिंह, पूर्व क्षेत्र के क्षेत्र प्रमुख संजीव दास, श्री सीताराम भट्ट क्षेत्र प्रमुख, पूर्वोत्तर क्षेत्र, श्री गोपाल मिस्त्री विश्वकर्मा क्षेत्र प्रमुख, उत्तर पूर्व,श्री एम. वेन्कटरमन राव क्षेत्र प्रमुख, दक्षिण मध्य, श्री रूद्र कुमार शर्मा क्षेत्र प्रमुख राजस्थान और श्री राजेन्द्र सिंह प्रांत संयोजक दिल्ली, उत्तर क्षेत्र आदि उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक परिषद् बैठक एवं कार्यशाला

शैक्षिक नवाचारों का अध्ययन कर अच्छे विचारों को अपनाएः गोबिन्द चन्द्र महंत

भोपाल। विद्या भारती की अखिल भारतीय प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक परिषद् की बैठक एवं कार्यशाला का आयोजन 15 से 17 नवम्बर 2022 तक सरस्वती विद्या मंदिर हायरसेकण्ड्री विद्यालय कोटरा भोपाल में किया गया। बैठक में प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षण को गुणवत्तापूर्ण एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप बनाने पर चर्चा की गई और सर्वसम्मति से निर्णय लिए गये। विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोबिन्द चन्द्र महंत ने कहा कि प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा के विषय को प्रत्येक प्रान्त में निचले स्तर तक ले जाना है। अन्य संस्थाओं द्वारा किये जा रहे शैक्षिक नवाचारों का अध्ययन करना एवं अच्छे विचारो को अपनाना चाहिए। राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्रीराम आरावकर जी ने बताया कि प्रारंभिक शिक्षा हेतु आदर्श समय-सारणी, आधारभूत विषयों का समाजोयन, रंगमंचीय कार्यक्रम सहित लगभग 50 सुझाव प्रान्तों को भेजे गए हैं और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिपेक्ष्य में 5+3+3+4 पद्धति लागू की गयी है। ऐसे में टोलियों के पुनर्गठन की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक कक्षाओं के गतिविधि आधारित शिक्षण, न्यूनतम लर्निंग अधिगम की प्राप्ति, नई पाठयपुस्तकों का अध्यापन, शिक्षण में टूल्स का उपयोग, आचार्य प्रशिक्षण आदि बिन्दुओं पर कार्य करने की आवश्यकता है। बैठक में विभिन्न क्षेत्रों से 21 कार्यकर्त्ता, दो राष्ट्रीय अधिकारी, पांच क्षेत्रीय अधिकारी सहित 28 सदस्य उपस्थित रहे। कार्यशाला में पाठ योजनाओं की समीक्षा एवं अभिनव पंचपदी तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति आधारित नवीन पाठ योजना निर्माण तथा लर्निंग आउटकम आदि विषयों पर देवकीनंदन चौरसिया जी ने प्रशिक्षण दिया। क्लासरूम मैनेजमेंट, लर्निंग आउटकम एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार शैक्षिक उन्नयन के बिन्दुओं पर प्राथमिक शिक्षा के अखिल भारतीय संयोजक श्री खगेश्वर दास जी ने प्रशिक्षण दिया। कौशल विकास एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण पर सुशील जी महाजन ने विचार रखे एवं शैक्षिक विषयों को कौशल विकास से जोड़ने की तकनीक आदि पर चर्चा की गयी। बस्ते का बोझ कम करना नितांत आवश्यक है। इस सम्बन्ध में स्थानीय स्थितियों के आधार पर योग्य निर्णय लेने की बात कही गई।

भारतीय विद्या मंडल विद्यालय भवन के प्रथम खंड का लोकार्पण

मा. इंद्रेश कुमार कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 6 नवंबर को मांडली (कठुआ, जम्मू-कश्मीर) में भारतीय शिक्षा समिति द्वारा संचालित भारतीय विद्या मंडल विद्यालय भवन के प्रथम खंड का लोकार्पण किया। कार्यक्रम की कुछ झलकियां !!

गुरु नानक देव जी ने सबका भला करने का संदेश दियाः बलवंत सिंह

नंदलाल गीता विद्या मंदिर तेपला में सिख धर्म के प्रथम गुरु - गुरु नानक देव जी की जयंती हर्षोल्लास से मनाई गई। आचार्य श्रीमती मनजीत कौर ने गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व और शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। आचार्य बलविंदर कौर, हरजीत कौर जी ने जपुजी साहब व आनन्द जी साहब का पाठ किया व अरदास कराई। प्राचार्य बलवंत सिंह जी ने कहा कि जब भी मानव अज्ञानता की ओर बढ़ता है तब ज्ञानी उसे अपने ज्ञान से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। गुरु नानक देव जी ने समाज के बाहरी आडंबरों से दूर रहकर प्रभु का सिमरन करते हुए सदमार्ग पर चलने और सबका भला करते रहने का संदेश दिया।

मध्य प्रदेश सरकार ने किया सम्मानित

शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए विद्या भारती महाकोशल प्रांत को सम्मान

विद्या भारती परिवार के लिए गौरव का क्षण विद्या भारती महाकोशल प्रांत को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने पुरस्कार से सम्मानित किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से पुरस्कार प्राप्त करते मा. राजकुमार आचार्य (कुलपति) अध्यक्ष सरस्वती शिक्षा परिषद जबलपुर, मा. नरेंद्र जी कोष्टी प्रदेश सचिव सरस्वती शिक्षा परिषद जबलपुर। सभी प्राचार्यों, आचार्यों, समिति पदाधिकारियों, अभिभावकों, छात्रों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

बिरसा मुंडा जी की जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन

15 नवंबर को सरस्वती विद्या निकेतन, केरल में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर माननीय काशीपति, कार्यकारिणी सदस्य विद्या भारती उपस्थित रहे।

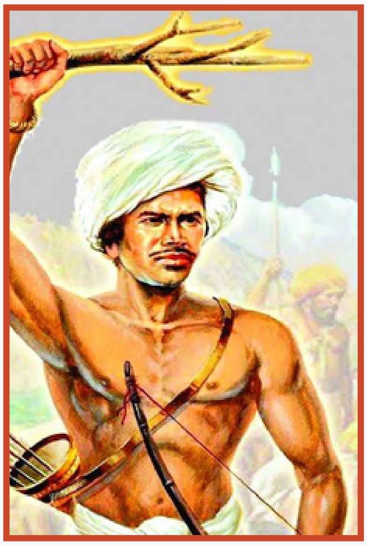

संयुक्त मेधा अलंकरण एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

लखीमपुर-खीरी। पं. दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज व सनातन धर्म सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इण्टर कालेज, मिश्राना, लखीमपुर-खीरी के संयुक्त तत्वावधान में 20 नवंबर को सत्र 2021-22 में हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट बोर्ड परीक्षा में टाप-10 छात्र/छात्राओं के उत्साहवर्धन के लिए "संयुक्त मेधा अलंकरण एवं वार्षिकोत्सव समारोह" का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल जी ने कहा कि विद्या मन्दिर शिक्षा को संस्कार युक्त बना रहे हैं। शिक्षा के माध्यम से ही बालक योग्य समर्पित नागरिक बनता है। अभिभावकों को भी अपने पाल्यों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिये। परिवारों में संस्कारक्षम वातावरण बनाना हम सबका कर्तव्य है। अध्यापकों को नवीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देना चाहिए। विशिष्ट अतिथि शिवकुमार जी, अखिल भारतीय मंत्री विद्या भारती ने कहा कि शिक्षा के साथ संस्कार एवं अनुशासन विद्या भारती की विशेषता है। विद्या भारती के पूर्व छात्र सम्पूर्ण भारत में विशिष्ट स्थानों पर राष्ट्र की उन्नति में सहभागी बन रहे हैं। सभी को लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ण मनोयोग से प्रयास करना चाहिए। सनातन धर्म सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इण्टर कालेज में इण्टरमीडिएट में सर्वाधिक अंक हेतु अंजली सिंह कुशवाहा एवं हाईस्कूल परीक्षा में सर्वाधिक अंक हेतु शैलजा दीक्षित को, पं. दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज (यू.पी.बोर्ड) में इण्टरमीडिएट में सर्वाधिक अंक हेतु विनीत कुमार राजपूत एवं हाईस्कूल परीक्षा में सर्वाधिक अंक हेतु अनिकेत प्रजापति को, पं दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज (सी.बी.एस.ई. बोर्ड) में इण्टरमीडिएट में सर्वाधिक अंक हेतु विनय पटेल एवं हाईस्कूल परीक्षा में सर्वाधिक अंक हेतु प्रषान्त दीप वर्मा को माननीय राज्यपाल ने गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया। तीनो ही विद्यालयों के 6-6 आचार्यों को सर्वश्रेष्ठ योगदान हेतु सम्मानित किया गया। विद्यालयों के 3 कार्यालय स्टाफ एवं 9 कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया। विज्ञान, संगीत, खेलकूद आदि में विशिष्ट योगदान देने वाले तथा विद्या भारती की विविध प्रतियोगिताओं में राष्ट्रीय स्तर पर स्थान प्राप्त करने वाले 24 छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। गत तीन वर्षों से निरन्तर शत-प्रतिशत उपस्थित रहने वाले एक छात्र को विशिष्ट पुरस्कार दिया गया।

सुघोष दर्शन के एंड्रॉइड ऐप का विमोचन

सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान भोपाल में विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्रीराम आरावकर ने मध्य भारत प्रांत में 23 जनवरी 2023 को होने वाले घोष प्रदर्शन कार्यक्रम सुघोष दर्शन के ऐप का विमोचन किया।

मातृशक्ति सम्मेलन (अपना माउंट एवरेस्ट खुद बनाएं और जीतेः मेघा परमार)

श्री बलराम उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर बस्सी में मातृ सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माउंट एवरेस्ट विजेता एवं ब्रांड एंबेसेडर मध्य प्रदेश बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान मेघा परमार जी ने कहा की अपना माउंट एवरेस्ट खुद बनाएं और उसे जीतें। मेघा परमार ने बताया कि वह विद्या भारती की पूर्व छात्रा हैं। आज वह जो भी हैं विद्या भारती के विद्यालय में जो संस्कार मिले उसी कारण से हैं। मुख्य वक्ता अमरनाथ जी चंगोतरा ने शिक्षा के साथ संस्कार की आवश्यकता पर बल दिया। इस दौरान कुर्सी दौड़ प्रतियोगिता, रस्सा खींच प्रतियोगिता, दीपक जलाओ प्रतियोगिता, माला बनाओ प्रतियोगिता, सुई धागा पिरोओ प्रतियोगिता एवं प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के साथ राष्ट्रीय विज्ञान मेले में विजेता छात्रा तनिष्का शर्मा व अंजलि गुर्जर को सम्मानित किया गया। बुजुर्ग महिलाओं को शॉल ओढ़ाकर एवं प्रतीक चिन्ह दे कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता केसर देवी जी शर्मा ने की और विशिष्ट अतिथि डेंटल सर्जन डॉक्टर रिचा राय नागौरी रहीं। इस अवसर पर रामदयाल जी सेन व्यवस्थापक आदर्श शिक्षा समिति जयपुर, नर्बदा शंकर जी पारीक प्रसिद्ध कथावाचक, प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष सत्य मोहन जी शर्मा आदि उपस्थित रहे। वहीं, विद्या_भारती आदर्श शिक्षा समिति द्वारा संचालित आदर्श विद्या मंदिर AVM चाकसू में मातृशक्ति सम्मेलन का आयोजन किया सम्मेलन में मुख्य अथिति दौसा से लोकसभा सदस्य श्रीमती जसकौर जी मीणा, जिला व्यवस्थापक रामदयाल जी सैन, सामाजिक कार्यकर्ता व उद्योगपति श्रीमती सुषमा जी जैन, श्रीमती रुचि जी मेहता सामाजिक कार्यकर्ता व एक्सपोर्ट व्यवसायी, श्रीमती गायत्री राठौड़ जिला परिषद सदस्य चाकसू आदि उपस्थित रहे। सांसद महोदया ने विद्यालय में वंदना कक्ष के लिए 10 लाख रुपए प्रदान करने की घोषणा की।

अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव : प्रयागराज

प्रयागराज । विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव का शुभारंभ 11 नवम्बर से 13 नवम्बर को प्रयागराज में किया गया। संस्कृति महोत्सव में अनेक विधाओं में राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाएं हुई। इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति पर अपने विचार रखने हेतु 'संस्कृति वार्ता' का आयोजन भी किया गया, जिसमें अनेक विद्वद्जन ने भाग लिया। महोत्सव के दौरान 12 नवम्बर को 'सांस्कृतिक संध्या' का आयोजन भी किया गया। जिसमें देशभर से आए छात्र-छात्राएं एवं अध्यापकगण की प्रतिभागिता रही।
तीन दिवसीय महोत्सव में अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान प्रश्न-मंच, पत्र-वाचन, आशु भाषण, कथा-कथन प्रतियोगिताएं की गई। इसके अतिरिक्त अन्य कार्यक्रमों में 11 नवम्बर को प्रदर्शनी का शुभारंभ तथा 12 नवम्बर को संस्कृति महोत्सव के उद्घाटन समारोह में मुख्यातिथि उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनन्दी बेन पटेल जी का आगमन हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तरी प्रयागराज से विधायक शहर हर्षवर्द्धन वाजपेयी एवं प्रतिष्ठित व्यापारी विदुप अग्रहरी जी आए। कार्यक्रम की अध्यक्षता महापौर प्रयागराज श्रीमती अभिलाषा गुप्ता 'नन्दी' जी ने किया। गरिमामयी उपस्थिति विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के अखिल भारतीय सह-संगठन मंत्री मा. यतीन्द्र जी की रही ।
12 नवम्बर को आयोजित सांस्कृतिक संध्या में प्रयागराज से सांसद डॉ. रीता जोशी मुख्यातिथि थे। संस्कृति वार्ता में मुख्य वक्ता स्वामी श्याम शरणम जी महाराज, अयोध्या धाम जी आए। समापन समारोह 13 नवम्बर को मुख्यातिथि फूलपुर से सांसद केशरी देवी पटेल , विशिष्ट अतिथि फूलपुर से विधायक प्रवीण पटेल जी आए जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष, प्रयागराज वी.के. सिंह ने किया। गरिमामयी उपस्थिति विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के महामंत्री अवनीश भटनागर की रही।

उत्तराखंड बोर्ड रिजल्ट में फिर लहराया परचम

जानिए विद्या भारती हर बार कैसे बनता है नंबर वन

उत्तराखंड | उत्तराखंड बोर्ड के रिजल्ट में इस बार भी विद्या भारती के छात्रों का परचम लहरा रहा है। हाईस्कूल और इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा में टॉप-10 छात्रों की लिस्ट में विद्या भारती के छात्रों की संख्या सबसे ज्यादा है। यह पहली बार नहीं है, बल्कि हर बार बोर्ड रिजल्ट में विद्या भारती के छात्र छाए रहते हैं। दरअसल, विद्या भारती अपने विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाए रखने के लिए पांच बुनियादों सूत्रों पर सतत रूप से काम करता है। यही पांच सूत्र विद्या भारती के छात्रों की सफलता की बड़ी वजह हैं।

विद्या भारती के पांच मंत्र:

1. प्रधानाचार्य सम्मेलन में हर साल का शैक्षिक व शिक्षणेत्तर गतिविधियों का कैलेंडर तय कर दिया जाता है। इस कैलेंडर के अनुसार सभी गतिविधियों पर अनवरत काम किया जाता है।
2. विद्या भारती के विद्यालयों के आचार्यों का समर्पण सबसे महत्वूर्ण है। विद्यालय और विद्यालय के बाद भी आचार्य अपने छात्रों के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास के लिए प्रयासरत रहते हैं।
3. प्रत्येक छात्र के अभिभावक से हर पंद्रहवे दिन आचार्य अनिवार्य रूप से भेंट करते हैं। उनके साथ छात्र के शैक्षिक विकास, उसकी अच्छाइयों और कमियों पर गंभीरता से चर्चा करते हैं और समाधान ढूंढते हैं।
4. हर वर्ष कक्षा पांच और कक्षा आठवीं के छात्रों की एक विशिष्ट प्रकार की मेधावी परीक्षा ली जाती है। इस परीक्षा के आधार पर छात्र के भावी शैक्षिक विकास, अभिरुचियों का आकलन हो जाता है।
5. गत पांच वर्ष से शिक्षा के बदलते स्वरूप और वर्तमान समय की आवश्यकताओं को देखते हुए आचार्यों के लिए प्रशिक्षण की संख्या बढ़ाई गई है। आचार्यों को शिक्षा में आ रहे बदलाव के प्रति अपडेट रखा जाता है और नई विधाओं की सतत जानकारी दी जाती है।

विद्या भारती संगठन महज शिक्षण संस्थान नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र सेवा का मिशन है। इस मिशन से जुड़ा व्यक्ति किसी समयावधि में बंधकर काम नहीं करता, बल्कि 24 घंटे समर्पित भाव से कार्य करता है। यही विद्या भारती के छात्रों की कामयाबी की वजह है।

भुवन : प्रांत संगठन मंत्री
विद्याभारती

टॉपर्स में 45 प्रतिशत विद्या भारती के छात्र

विद्या भारती के प्रदेश निरीक्षक डॉ. विजयपाल सिंह के अनुसार उत्तराखण्ड में विद्या भारती से संबद्ध 633 विद्यालय हैं, जिनमें लगभग 140 माध्यमिक विद्यालय हैं। उत्तराखण्ड बोर्ड की दसवीं व बारहवी की वरीयता सूची में 40 से 45 प्रतिशत स्थान विद्या भारती के सरस्वती विद्या मन्दिरों के छात्र-छात्राओं ने प्राप्त किये हैं, जबकि बोर्ड की दसवी की परीक्षा में बैठे कुल छात्रों में विद्या भारती के छात्रों का प्रतिशत मात्र 6 प्रतिशत है। बोर्ड द्वारा घोषित 134 टॉप विद्यार्थीयों में 60 विद्यार्थी विद्या भारती के विद्यालयों के हैं। कक्षा-12 में विद्या भारती के विद्यार्थियों ने 45 प्रतिशत मेरिट पर कब्जा किया है। इंटर की वरीयता सूची में 33 यानि 40 प्रतिशत स्थान विद्या भारती के विद्यार्थियों ने प्राप्त किए हैं। इण्टमीडिएट में सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज मायापुर हरिद्वार की दीया राजपूत ने 97 प्रतिशत अंक के साथ राज्य में पहला स्थान प्राप्त किया है। बागेश्वर के सुमित सिंह मेहता और सरस्वती विद्या मन्दिर जसपुर के दर्शित चौहान ने प्रदेश में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। कक्षा-10 में विवेकानन्द विद्या मन्दिर मण्डलसेरा, बागेश्वर की रवीना कोरंगा ने प्रदेश में तीसरा, नगरस्वती विद्या मन्दिर चिन्यालीसौड़ उत्तरकाशी की समीक्षा व स०वि०म० बेलनी रुद्रप्रयाग के नितिन बिष्ट ने छठा स्थान प्राप्त किया है। प्रदेश में सातवें, आठवें, नवें तथा दसवें स्थान पर भी विद्या भारती के विद्यार्थियों का नाम है।

विद्या भारती की उपलब्धियाँ

विद्या भारती शिक्षा भारती विद्यालय, रामनगर, रोहतक कि छात्रा वंशिका को शीर्ष 20 सर्वश्रेष्ठ विचारों में चुना गया और 9 नवंबर 2022 को नीति आयोग में सम्मानित किया गया और नीति आयोग में एटीएल की टिंकर बुक में पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया गया।

विद्याभारती मध्यभारत प्रांत, सरस्वती शिशु मंदिर, इटारसी की पूर्व छात्रा रूबी भदौरिया पिता श्री फूलसिंह जी भदौरिया का भारतीय नौ सेना के एसएसआर (वरिष्ठ माध्यमिक भर्ती) में चयनीत।

विद्या भारती के पूर्व छात्र, (एमसीएल सरस्वती बाल मंदिर, हरिनगर, दिल्ली) बैडमिंटन के पैरा खिलाड़ी तरुण ढिल्लों को अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया। तरुण ढिल्लो का चयन 2018 से 2022 तक की चार साल की उपलब्धियों के आधार पर किया गया।

उपलब्धियां

- वर्ष 2018 में एशियन पैरा गेम्स में सिंगल मुकाबले में स्वर्ण और टीम इवेंट में कांस्य पदक
- वर्ष 2019 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में सिंगल व डबल मुकाबले में रजत पदक
- वर्ष 2022 में टोक्यो ओलंपिक में चौथा स्थान

सरस्वती देवी निकेतन, करीमगंज, दक्षिण असम प्रांत के पूर्व छात्र कृष्णु डे को पीएचडी 2022 आईईटी हडस्वेल इंटरनेशनल रिसर्च स्कॉलरशिप के विजेता के रूप में घोषित किया गया है, जो उन्हें अपने पीएचडी से परे उभरती हलाइड पेरोसाइट सामग्री के रोमांचक प्रकाश उत्सर्जन अनुप्रयोगों का पता लगाने की अनुमति देगा।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर,
महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 65

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net | www.vidyabharatisamvad.com

ई-मेल : vbabss@yahoo.com | vbsamvad@gmail.com
फोन: 91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में,